फील्ड-ट्रिप में खिला महादू

बसवंत विठाबाई बाबाराव

कोरोना का समय खत्म होने वाला था और हमारी ज़िंदगी एक नए सिरे से फिर से शुरू होने वाली थी। बेशक, उस समय की यादें आज भी लोगों के मन में बसी थीं। लॉकडाउन के दौरान स्कूल बंद थे। बच्चे पढ़ाई-लिखाई और अपने दोस्तों से दूर थे। ऐसे समय में, कई टीचरों ने अपने लेवल पर कुछ एक्टिविटीज़ शुरू कीं। बसवंत विठाबाई बाबाराव वैसे पेशे से तो टीचर नहीं हैं। लेकिन कोरोना के समय में, उन्होंने अपने गाँव के बच्चों के लिए 'आनंदशाला' शुरू की। आनंदशाला में लगभग 25-30 बच्चे रेगुलर आते हैं। यह है 'आनंदशाला की एक रोचक घटना।

महादू पिछले दो दिनों से स्कूल में नहीं दिखा था।

तीसरे दिन, उसकी बहन पूजा अकेले ही स्कूल आई।

मैंने पूजा से पूछा, "महादू स्कूल क्यों नहीं आता?"

पूजा थोड़ी उलझन में लगी। फिर उसने धीरे से कहा, “सर, आपने जो गणित के सवाल दिए थे, वह उन्हें हल नहीं कर पाया। इसीलिए वह स्कूल नहीं आता है।”

“ओह, लेकिन अगर वह स्कूल नहीं आएगा, तो फिर गणित कैसे सीखेगा?”

मेरी बात सुनकर पूजा ने नीचे देखा और कहा, “देखिए... क्लास में दूसरे बच्चे उस पर हंसते हैं। इसीलिए वह नहीं आता है।”

मैंने पूजा के साथ एक चिट्ठी भेजी और महादू से स्कूल आने के लिए कहा, लेकिन एक हफ्ता बीत गया, फिर भी महादू स्कूल नहीं आया।

लॉकडाउन का समय था। स्कूल बंद थे, लेकिन तब भी बच्चे गांव में घूमते, खेलते और छोटी टोलियों में घूमते थे। हमारी छोटी सी ‘आनंदशाला’ इस विचार से शुरू हुई थी कि हम शाम को दो-तीन घंटे बच्चों को इकट्ठा करके आपस में कुछ सीख सकें।

उस शुक्रवार, स्कूल छूटने से पहले, मैंने बच्चों से कहा, “मेरे पास कल के लिए एक ख़ास सुझाव है।”

बच्चों ने मेरी ओर उत्सुकता से देखा।

किसी ने फुसफुसाकर कहा, “सर, हमें कुछ मजेदार होमवर्क दीजिए!”

मैं हंस पड़ा।

“कोई होमवर्क नहीं। कल शनिवार है, परसों इतवार है। और इतवार को... हम फील्ड-ट्रिप पर जाएंगे।”

उससे क्लास में काफी हंगामा हुआ।

“ओह... सैर-सपाटा - फील्ड-ट्रिप! उसमें कितना मज़ा आएगा!”

मैंने आगे कहा, “इतवार जब तुम सब आओ, तो दो मुट्ठी चावल और एक मुट्ठी दाल अपने साथ लाना। कोई भी दाल चलेगी और कोई भी चावल चलेगा।”

फील्ड-ट्रिप का मतलब है जंगल में मिलकर खाना बनाना... पलाश के पत्ते इकट्ठा करके पत्तलें बनाना... जंगल में मिलने वाले कंद और सब्ज़ियों से बना मसाला भात, इमली के पेड़ के नीचे बैठकर खाना... बच्चे यह सब जानते थे।

फिर मैंने जान-बूझकर कहा, “यह सूचना उन लोगों तक भी पहुँचाना जो आज स्कूल में मौजूद नहीं हैं।”

स्कूल से निकलते समय हमने ‘सच्चा तो एक ही धर्म है...’ प्रार्थना पढ़ी।

बच्चों ने उस दिन की प्रार्थना बहुत जोश के साथ पढ़ी। प्रार्थना के बाद बच्चे कूदते हुए घर भागे।

उसी शाम, महादू लड़खड़ाते हुए मेरे पास आया। पहले, छोटी-मोटी बातें करने के बाद, महादू हमेशा आखिर में ज़रूरी बात पर आता था। यह उसकी आदत थी।

सबसे पहले, उसने मुझे अपनी भैंस के बारे में बताया। उसके लिए कौन सा चारा अच्छा है... निराई से मिलने वाली टर्फ, मार्वल, केना घास... यह अलग-अलग घासें कहाँ और कैसे मिलती हैं... किसके खेत में निराई चल रही है... किसके खेत में कुएँ से पानी छोड़ने के बाद हरी घास कैसे उग आई है...

यह सबकुछ कहने के बाद, उन्होंने धीरे से कहा, “सर, मैंने सुना है कि आप फील्ड-ट्रिप के लिए जा रहे हैं। अच्छा होगा कि अगर हम सब गंटावर के खेत में जाएं। वहाँ एक नाला है, वहाँ सब बच्चे अलग-अलग पेड़ भी देख सकेंगे...”

इस परिचय के बाद, महादू मुद्दे की बात पर आया, “सर, क्या मैं भी आपके साथ चल सकता हूँ?”

मैंने जान-बूझकर नकारात्मक रुख अपनाया।

“क्या हमने यह तय नहीं किया था कि जो लोग एक हफ़्ते तक स्कूल नहीं आएंगे, वे सैर-सपाटे पर नहीं जाएंगे?”

उसने तुरंत कहा, “ठीक सर... लेकिन इस बार मुझे जरूर आने दें। उसके बाद मैं रोजाना स्कूल आऊंगा।”

महादू पढ़ने-लिखने में पीछे था। उसे गणित की क्लास और गणित की नोटबुक से डर लगता था; लेकिन प्रैक्टिकल गणित में वह काफी तेज़ था।

खेत में निराई, बुआई के लिए प्रति एकड़ कितने बीज चाहिए...

यह सब बातें उसे अच्छी तरह पता थीं।

आखिरकार, महादू को फील्ड-ट्रिप में शामिल होने की इजाज़त मिल गई।

वह पूरे जोश के साथ घर से निकला।

फील्ड-ट्रिप वाले दिन, पूरी तस्वीर बदल गई।

जैसे-जैसे टोली गाँव से निकलने लगी, महादू का आत्मविश्वास भी बढ़ता गया।

कौन से पत्ते खाए जा सकते हैं, कौन से नहीं... कौन सी सब्ज़ी कहाँ उगती है...

वह यह सारी बातें महादू बड़े जोश से सबको बता रहा था।

रास्ते में एक शरीफे का पेड़ मिला। उसके नीचे, रतालू का एक घना झुरमुटा फैला हुआ था। उनके बीच में एक घनी झाड़ी थी।

महादू वहीं रुक गया।

“थोड़ी देर यहीं रुको,” उसने सबसे कहा।

बच्चे, जो रोज़ स्कूल में उसकी बातों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते थे, वे उसकी बात मानकर वहीं रुक गए।

एक बेल झाडी, रतालू और शरीफे के पेड़ों के सहारे ऊपर चढ़ रही थी। महादू झाड़ी में घुसकर बेल के छोटे पत्ते तोड़ने लगा।

जैसे ही वह झाड़ी में घुसा, वैसे ही मुझे चिंता हुई।

मैं उसके पास गया और मैंने कहा, "महादू, ज़रा सावधान रहना... नीचे बिच्छू और कीड़े हो सकते हैं।"

इससे पहले कि मैं अपनी बात पूरी कर पाता, उसने मुझे रोका और कहा, "सर, आप यहाँ से कुछ दूर पर ही रुकें। क्योंकि यहाँ नीचे साँप रहते हैं।"

बच्चों को सैर-सपाटे पर ले जाते समय सारी ज़िम्मेदारी बड़ों की होती है। पहले की कई फील्ड-ट्रिप्स में, मैं बच्चों को बहुत सारी बातें बताता था। लेकिन जब महादू हमारे साथ होता था, तो मुश्किल जगहों, ध्यान से रुककर देखने वाली जगहों, खुजली वाले पत्तों, बेलों... सभी के बारे में वही हमें सिखाता था। फील्ड-ट्रिप्स के दौरान हमें उनके अनुभव और प्रकृति के ज्ञान से बहुत फ़ायदा होता था।

महादू उस बेल के मुट्ठी भर पत्ते तोड़कर लाया।

सबसे पहले उसने मुझे दो पत्ते दिए।

फिर, हर बच्चे को एक-एक पत्ता देते हुए उसने कहा, "इन्हें खाओ।"

हम सबने पत्तों का स्वाद चखा।

उनका एक अलग ही स्वाद था। वो स्वाद सबके मुँह में काफ़ी देर तक रहा। वो सबको बहुत पसंद आया।

"ये पत्ते किसके हैं?" बच्चों ने तुरंत पूछा।

"ये पत्ते फंदी के हैं," महादू ने बताया।

"फंदी के?"

"हाँ, फंदी के!"

उसने आगे कहा, “फंदी इस बेल का नाम है। इन पत्तों की सब्ज़ी बनती है। उसे फंदी भाजी कहते हैं।”



तभी मनमथ झाड़ी की तरफ भागा।

मैंने उसे रोका।

मैंने महादू से कहा, “जरा मनमथ को कुछ और पत्ते दे दो।”

महादू ने उसे कुछ और पत्ते दिए।

मनमथ के कलेक्शन में कुछ और पत्ते ज़ुड़ गए।

थोड़ा आगे जाकर, मोड़ पर, एक सुंदर अमलतास का पेड़ था।

महादू वहां रुका। उसने कुछ देर तक पेड़ को गौर से देखा।

फिर वो अपने हाथ में कुछ लेकर आया... बच्चे उत्सुकता से उसके चारों ओर इकट्ठा हो गए। महादू ने अपने हाथ खोला।

एक बड़ा कीड़ा उसकी हथेली से भिनभिनाता हुआ उड़ा... "वो सोने का कीड़ा है," महादू ने कहा, "वो अमलतास के पेड़ पर ही पाया जाता है. उस कीड़े को अमलतास के पत्ते खाना बेहद पसंद हैं।"

वही बच्चे जो अक्सर क्लास में महादू पर हँसते थे और गणित न जानने के लिए उसका मज़ाक उड़ाते थे, वे अब उसके चारों ओर इकट्ठा होकर उसकी हर बात ऐसे सुन रहे थे जैसे वो उसके छात्र हों।

फिर हम आगे बढ़ते हुए नागनाथ गंटावर के खेत की ओर मुड़े। हमें देखते ही नागनाथ आगे आया। वो सिर पर तौलिया लपेटे हुए था। उसने अपने चेहरे से पसीना पोंछा और कहा, "आइए गुरुजी। लगता है आज आप बच्चों को सैर कराने लाए हैं।"

"हाँ," मैंने कहा, "आज मैं उन्हें किताब के बाहर के असली खेत-मैदान दिखाना चाहता हूँ।"

नागनाथ मुस्कुराए और बोले, "तो पहले नदी पर चलें। वहाँ देखने के लिए बहुत से अलग-अलग किस्म के पौधे और जीव हैं।"

तभी नागनाथ के बच्चे, अमृता और अनुज भी हमारे पास आए।

"बाबा, हम चवाळे (खाली बोरियों को सिलकर बनाया गई दरी) पर इमली के पेड़ के नीचे क्यों नहीं बैठते?" अमृता ने पूछा।

"अमृता, हम लौटकर आने के बाद वहीं बैठेंगे," नागनाथ ने कहा।

थोड़ा आगे जाने पर, ज्वार की फसल दिखाई दी। महादू तुरंत आगे बढ़ा।

"इस ज्वार में अब बालियाँ आने लगी हैं," उसने कहा।

"ज्वार बिना पानी के भी उग सकता है, वह सिर्फ़ ठंड के मौसम में ही उगता है।"

नागनाथ ने सहमति में अपना सिर हिलाया।

तभी, मनमथ एक झाड़ी के पास रुका।

"सर, ज़रा इन पत्तों के पिछले भाग को देखें," उसने कहा।

उनमें से कुछ पत्तों के पीछे छोटी-छोटी गांठें थीं।

"मैंने तुम्हें पिछली फील्ड-ट्रिप में उनके बताया था," मैंने बच्चों को याद दिलाया।

मैंने पिछली पिछली फील्ड-ट्रिप में बच्चों को बताया था कि अर्जुन, बिब्बा, पलास जैसे कुछ पेड़ों के पत्तों के पीछे गांठें होती हैं।

"हमें उन गांठों वाले पत्तों को अलग से इकट्ठा करना चाहिए।"

जैसे ही हम नदी किनारे पहुँचे, हमें भिनभिनाने की आवाज़ सुनाई दी।

अनुज थोड़ा डरकर बोला, "बाबा, यहाँ बहुत सारी मधुमक्खियाँ हैं।"

नागनाथ रुका। "चिंता मत करो। मधुमक्खियाँ नदी किनारे पानी पीने के लिए आईं हैं। वे हमें परेशान नहीं करेंगी, और हम भी उन्हें परेशान नहीं करेंगे।"

महादू ने इधर-उधर देखा और कहा, "इन मधुमक्खियों से हमारी फसलों को भी बड़ा फ़ायदा होता है।"

नागनाथ ने मेरी तरफ देखा और कहा, "गुरुजी, फील्ड-ट्रिप में बच्चों को ऐसी ही शिक्षा मिलनी चाहिए। यही असली स्कूल है।"

फिर हम नदी के किनारे-किनारे काफी दूर तक चले।

कुछ बच्चों ने नदी के किनारे पड़े चिकने पत्थर उठाए, कुछ नदी की रेत इकट्ठा करके उसपर पैर रखने लगे। मनमथ ने कुछ चमकदार कंकड़ उठाए।

बच्चों को रेत के टापू पर एक साथ मज़े करते देख, नागनाथ आगे आए और वे अपनी पुरानी यादें सांझा करने लगे।

"जब नदी सूख जाती थी, तो हम इस रेत में गड्ढा बनाकर पानी पीते थे।"

जब नदी सूख जाती थी, तब भी उसकी रेत के अंदर पानी होता था।

नागनाथ कई जानकारी बता रहे थे - अतीत में कितने लोग इस रेत को घर बनाने के लिए ले गए, इसलिए ऐसी जगहें अब कम हो गईं थीं।

उनमें से एक-दो बच्चों ने खुद गड्ढा बनाकर देखा और उसमें पानी इकट्ठा किया। बच्चों को उसमें काफी मज़ा आया।

गर्मी थोड़ी बढ़ने लगी थी।

फिर अब हम धीरे-धीरे इमली के पेड़ की ओर बढ़े।

हमारी फील्ड-ट्रिप इमली के पेड़ के नीचे पहुंचकर खत्म हुई।

सब बच्चे बताने लगे कि उन्होंने क्या देखा, क्या खाया, क्या सीखा।

अपनी नोटबुक में उन्होंने वे बातें विस्तार से लिखीं।

कुछ ने पेड़ों, पत्तियों, मधुमक्खियों, तितलियों की तस्वीरें भी बनाई। बच्चे एक-दूसरे से ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे।

मैंने जान-बूझकर महादू के प्रकृति ज्ञान की तारीफ़ की।

मैंने सबको बताया कि वह ज्ञान कितना ज़रूरी था।

उस दिन के बाद से महादू रेगुलर स्कूल आने लगा।

अब वह क्लास में डरा-सहम नहीं बैठता था।

धीरे-धीरे उसकी गणित भी बेहतर होने लगी।

फील्ड-ट्रिप में खिलने के बाद महादू धीरे-धीरे स्कूल में भी खिल उठा।

हिंदी: अरविन्द गुप्ता
05.01.2025